اپریل ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

PUBLISHED ON 4TH SUNDAY OF EVERY MONTH
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

April 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 9 अंक 10

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षकः
मु० र० आबिद, [illegible]

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2013

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

क़ायम महदी नक़वी 'तहज़ीब' नगरौरी

सै० आसिफ़ अब्बास नौगांवी, हैदर अब्बास रिज़वी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

[illegible]

Per Copy 20/- Annual 200/-

सम्पादन समिति

- डॉ० अमानत हुसैन नक़वी
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- नैय्यर महदी, जलालपूरी
- मोहम्मद आरिफ़ बस्तवी
- मिर्ज़ा मो० समद अब्बास
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तक़ी नक़वी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

अप्रैल 2013ई०
जमादिउल अव्वल 1434हि०

इस्लाम धर्म शास्त्र

लेखक : जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
अनुवादक : जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 1

अध्याय : 1

ईश्वर का ज्ञान

(1) तौहीदः– तौहीद का अर्थ एकेशवरवाद है। क्योंकि यदि कई ईश्वर होते तो संसार के प्रबन्ध में झगड़ा होता। एक ईश्वर कुछ कहता दूसरा कुछ, इस प्रकार मतभेद बढ़ जाता और कोई वस्तु उत्पन्न न होती।

(2) अद्लः– अर्थात ईश्वर न्यायी है, अत्याचारी नहीं। क्योंकि अत्याचार करना बुरा है और ईश्वर प्रत्येक बुराइयों से पवित्र है।

ईश्वर का ज्ञान

(1) जिस प्रकार कोई घर अथवा मिट्टी का खिलौना बिना निर्माणकर्ता के निर्मित नहीं होता उसी प्रकार नभ मण्डल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, घन, पर्वत, वृक्ष, मनुष्यों तथा पशुओं का निर्माता भी अवश्य होना चाहिए। जो इन समस्त वस्तुओं का जन्मदाता है वही ईश्वर है।

(2) जिस प्रकार चर्खा चलाया जाता है तब चलता है उसी प्रकार आकाश तथा पृथ्वी का चलाने वाला भी होना चाहिए। वही ईश्वर है।

(3) पथिक के पदचिन्हों को देखकर यह ज्ञात होता है कि कोई पथिक इधर से गया है एंव ऊंट की मेंगनियों को देख कर यह अनुमान किया जाता है कि इधर से ऊंट होकर गया है अतः यह सिद्ध हुआ कि सृष्टि का बनाने वाला भी कोई अवश्य है। वही ईश्वर है।

सिफ़ाते सुबूतिया

अर्थात् जो गुण ईश्वर में पाये जाते हैं वे आठ हैंः–

(1) क़दीम (अनादि एवं अनन्त) :–अर्थात् वह सदैव से है और सदैव रहेगा।

(2) क़ादिर (सर्वशक्तिमान) :–अर्थात् वह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है।

(3) आलिम (सर्वज्ञानी) :–अर्थात् उसको प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है।

(4) मुदरक (सर्वबोधी) :–अर्थात् वह बिना आंख, कान तथा नाक के प्रत्येक वस्तु को देख, सुन और सूंघ सकता है।

(5) हई (सजीवन) :–अर्थात् उसे विनाश नहीं, वह जीवित है और सदा जीवित रहेगा।

(6) मुरीदः–अर्थात् वह प्रत्येक कार्य अपने अधिकार से इच्छानुसार करता है।

(7) मुतकल्लिमः–अर्थात् वह जिस वस्तु में चाहे बात करने की शक्ति उत्पन्न कर सकता है।

(8) सादिक़ः–अर्थात् वह सत्यवादी है।

सिफ़ाते सलबिया

अर्थात् जो बातें ईश्वर में नहीं पायी जातीं वे आठ हैंः–

(1)मुरक्कब नहींः–अर्थात् किसी वस्तु से मिलकर नहीं बना है।

(2) जिस्म नहींः–अर्थात् वह निराकार है।

(3) मकान नहींः–अर्थात् उसका कोई एक निवास स्थान (ठिकाना) नहीं। वह सर्वव्यापी है।

(4) हुलूल नहींः–अर्थात् वह किसी में प्रवेश नहीं करता।

(5) मरई नहींः–अर्थात् वह देखाने में नहीं आता।

(6) महले हवादिस नहींः–अर्थात् वह एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में परिवर्तित नहीं होता।

(7) वह अपना कोई सहयोगी नहीं रखतां

(8) समस्त विशेषताएं ईश्वर के व्यक्ति से प्रथम नहीं वरन् उसके व्यक्तित्व से सम्बन्धित हैं।

अध्याय 2

सृष्टि की रचना

संसार की उत्पत्तिः– ईश्वर को जब संसारोत्पत्ति का विचार हुआ तब ईश्वर ने कह दिया कि ''हो जा'' अतः संसार हो गया।

मनुष्य की उत्पत्तिः–अर्थात् हज़रत आदम का जन्म। आकाश एंव पृथवी की रचना करने के

पश्चात् ईश्वर ने हज़रत इज़राईल (एक दूत) के द्वारा विभिन्न प्रकार की एक मुट्ठी मिट्टी मंगवाई और उसको प्रथम पानी में गुंधवाया फिर उसको खमीर होने के लिए कुछ समय तक छोड़ दिया कि उसमें लस उत्पन्न हो गया तदोपरान्त उसका एक पुतला (मूर्ति) बनाया और उसे सूखने के लिए छोड़ दिया यहां तक कि उसमें ठीकरे की भांति खनखनाहट उत्पन्न हो गईं। फिर उसमें रूह (आत्मा) फुंकी और फ़रिश्तों (देवताओं) को सजदा (दण्डवत, मस्तक झुकाना) करने का आदेश दिया फिर कुछ समय तक स्वर्ग में रखा तत्पश्चात संसार में भेजा और पृथ्वी से उपजने वाली वस्तुओं को उसका आहार बनाया। यह घटना सन् 1382 हि0 तथा सन् 1962 ई0 से लगभग 7598 वर्ष पूर्व की है। इसके पश्चात ईश्वर ने अपने सामर्थ्य प्रभुत्व से हज़रत हव्वा को उत्पन्न किया। फिर हज़रत आदम तथा हज़रत हव्वा का परस्पर विवाह हुआ और उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए। उनके हेतु ईश्वर ने स्वर्ग से दो हूरों (अप्सराओं) को उनसे विवाह के लिए भेजा अतः उनका विवाह हुआ। इसी प्रकार उन दोनों की सन्तान पुत्र तथा पुत्री में परस्पर विवाह होता रहा और इस क्रम के अनुसार जन संख्या में वृद्धि होती रही है।

सृष्टि रचना का उद्देश्य

संसार में बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति कोई कार्य व्यर्थ नहीं करते चाहे उनके उद्देश्य को लोग भली भांति समझें अथवा न समझें इसी प्रकार ईश्वर ने संसार तथा सृष्टि की रचना व्यर्थ नहीं की है। उसके कुछ उद्देश्य हैं। उद्देश्य क्या हैं, ईश्वर के आदेशों का भली भांति सहृदय पालन करना और उसकी इबादत (भक्ति) करना।

नबूवत का वर्णन

गत पृष्ट पर लिखा जा चुका है कि सृष्टि रचना का उद्देश्य ईश्वर की इबादत अर्थात् भक्ति करना और उसके आदेशों का पालन करना है। परन्तु परमात्मा या ईश्वर को कोई देख नहीं सकता और इससे कोई वार्तालाप नहीं कर सकता। अतः इसकी आवश्यकता हुई कि ईश्वर तथा प्राणी जगत के मध्य कोई ऐसा व्यक्ति हो जो ईश्वर की वाणी को सुने और मनुष्यों से उसका व्याख्यान करे तथा ईश्वर के आदेशों को मनुष्यों तथा जीव जन्तुओं तक पंहुचाए। उनको सुमार्ग बताए जिसमें उनका लोक तथा प्रलोक दोनों स्थान पर कल्याण हो और यदि ऐसा न हो तो उनके विनाश का कारण होगा। अतः ईश्वर की ओर से रसूलों (सन्देश पहुंचाने वाले महापुरूष) का आना आवश्यक हो गया कि वे संसार में आकर प्राणियों को उन बातों के करने से रोक दें जो ईश्वर को अप्रिय हैं और उन बातों के करने का आदेश दे जो ईश्वर को प्रिय है। यही समाचार देने वाला व्यक्ति नबी, रसूल अथवा पैग़म्बर कहलाता है।

अध्याय 3

नबियों के गुणों का वर्णन

(1) प्रत्येक रसूल, नबी तथा पैग़म्बर आदि जन्म काल से अन्त समय तक विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े पापों से मुक्त होता है वह निरापराध तथा पवित्र है। भूल से भी उससे कोई पाप नहीं होता।

(2) नबी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने समय के व्यक्तियों से सब बातों में उत्तम हो और उस विद्या में दक्ष हो जिसकी आवश्यकता उसके अनुयायियों को हो।

(3) उस में सभी विशेषताएं (सद्गुणों) विद्वमान हों जैसेः– बुद्धि, कुलीन्ता, वीरता, दया, साहस, गम्भीरता इत्यादि। और छल, कपट, लालच, धन, दान की अभिलाषा कायरता, दुराचारण, अपवित्रता तथा संसार प्रेम से वन्चित (विहीन) हो।

(4) उसे कोई घृणात्मक रोग न हो जैसेः–कोढ़ प्रदर इत्यादि और वह कुलग, मूक, बहरा तथा अपाहिज न हो।

(5) उसके वंश में किसी प्रकार का दोष न हो।

(6) वह अपने में मोजिज़ा (ऐश्वरीय शक्ति से चमत्कार) रखता हो। जैसेः– उंगली के संकेत से चन्द्रमा के दो टुकड़े कर देना, मृत व्यक्तियों को जीवित कर देना, वृक्षों को बात करने की शक्ति प्रदान कर देना। पत्थरों तथा कंकरों से ईश्वर के गुणगान करा लेना इत्यादि।

नबियों अथवा पैग़म्बरों की गणना

संसार में जितने पैग़म्बर (ईश्वर के

सन्देशधारी) आए उनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार बताई जाती है। सभी पैग़म्बरों तथा बारह इमाम (अलैहिस्सलाम) समस्त फरिश्तों (ईश्वर दूतों/देवता) से श्रेष्ठ हैं। जिन नबियों का व्याख्यान कुरआन ने किया है उन पर सम्पूर्ण विश्वास रखना इस्लाम धर्म में अनिवार्य है। सभी नबियों ने इस्लाम धर्म की शिक्षा दी। सभी पैग़म्बर नियमों, सिद्धान्तों तथा सदाचरण में एकमृत थे। केवल फ़ुरू–ए–दीन (धर्म के गौड़ सिद्धान्त/आदेश) के उपदेशों (आदेशों) में समयानुसार कुछ परिवर्तन होता रहा।

कुरआन द्वारा वर्णित नबियों के नाम

(1) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम, (2) शीस अ0, (3) इद्रीस अ0, (4) नूह अ0, (5) हूद अ0, (6) सालेह अ0, (7) शुऐब अ0, (8) इब्राहीम अ0, (9) लूत अ0, (10) मूसा अ0, (11) ईसा अ0, (12) इस्माईल अ0, (13) याकूब अ0, (14) इस्हाक़ अ0, (15) दाऊद अ0, (16) सुलैमान अ0, (17) अय्यूब अ0, (18) यूनुस अ0, (19) इल्यास अ0, (20) यहिया अ0, (21) ज़करिया अ0, (22) हारून अ0, (23) जुलकिफ़्ल अ0, (24) यूसुफ अ0, (25) हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सवल्लल्लाह अलैह व आलेही वसल्लम)

सर्वश्रेष्ठ नबी

(1) नूह अ0, (2) इब्राहीम अ0, (3) मूसा अ0, (4) ईसा0 अ0, (5) मुहम्मद मुस्तफा स0 अ0।

इन सब में उत्तम हमारे पैग़म्बर हैं। उनकी नबूवत, शरीयत, (धर्म शास्त्र/धर्म विधि) और स्मृति प्रलय तक रहेगी।

नबियों तथा इमामों की उत्पत्ति

ईश्वर का विचार जब सृष्टि सजाने का हुआ तो सर्व प्रथम अपने मित्र मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 के नूर (प्रकाश) को उत्पन्न किया जिसके कारण समस्त विश्व प्रकाशित हो गया। तत्पश्चात वही नूर हज़रत आदम अ0 के मस्तक पर था फिर नूर प्रत्येक नबियों तथा पैग़म्बरों में स्थानान्तरण होता रहा।

फ़रिश्तों की उत्पत्ति

ईश्वर ने नबियों तथा मनुष्यों के अतिरिक्त कुछ और लोगों को नूरानी (प्रकाशित) तत्व से उन्पन्न किया जो लोक तथा परलोक के कार्यकर्ता है और प्रत्येक समय ईश्वर के ध्यान ज्ञान में व्यस्त रहते हैं। वे जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं। उनमें से चार श्रेष्ट फिरिश्तों के नाम तथा कार्य निम्नलिखित हैः–

(1) जिबरईल :– आप ईश्वर के आदेशों को नबियों तथा पैग़म्बरों तक पंहुचाते हैं।

(2) मीकाईल :– आप ईश्वर की आज्ञा से कुल प्राणियों को जीविका पंहुचाते हैं।

(3) इज़राईल :– आप समस्त जीव धारियों का प्राण हरण करते हैं।

(4) इसराफ़ील :– आप प्रलय के पूर्व सूर (भोपू) फूकेंगे जिसके बिकट नाद से समस्त प्राणी मर जायेंगे। आप केवल इसी कार्य के लिए नियुक्त हैं।

आठ प्रसिद्ध पैग़म्बरों का वर्णन

(1) हज़रत आदम अ0:– इसके पूर्व आपके जन्म का उल्लेख किया जा चुका है। आप 1962 ई0 से लगभग 7589 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर लाये गये। आप सर्वप्रथम सरनाद्वीप अर्थात श्रीलंका में 'आदम पर्वत' पर उतारे गये। यदि लंका को भारत वर्ष का एक अंग मान लें तो भारत वर्ष ही को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उसकी भूमि पर प्रथम नबी वर्तमान सृष्टि के बाबा आदम पधारे। उनकी पत्नी हज़रत हव्वा को 'जद्दा' (सऊदी अरब) में उतारा। कुछ समय के पश्चात आदम तथा हव्वा में अरफ़ात के मैदान (मक्का) में जिलहिज्जा (बक़रीद) के मास की 9 तिथि को भेंट हुई। इसी के स्मरण में मुसलमान हज के समय 9 बक़रीद को अरफ़ा दिवस मनाते हैं और अरफ़ात के मैदान में उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं। आप की आयु लगभग 930 वर्ष की हुई ।

प्रथम मानव–हत्या

हज़रत आदम अ0 के दो पुत्र 'क़ाबील' तथा 'हाबील' थे। हाबील छोटे, सुशील, सदाचारी तथा ईश्वर भक्त थे इसी कारण हज़रत आदम उनको अपनी नबूवत का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। अतः यह बात बड़े भाई क़ाबील को अप्रिय लगी उसने विचार किया कि यदि हाबील का वध कर डाला जाए तो यह पद मुझे मिल जाएगा। इसी विचार के वंशीभूत होकर क़ाबील ने हाबील का वध कर डाला और भूमि में गाड़ दिया। उस समय संसार के चौथाई मनुष्य मर गये। इसके पश्चात हज़रत आदम अ0 के दूसरे पुत्र हज़रत शीस अ0 उत्पन्न हुए फिर अन्त में इन्हीं को नबूवत का पद मिला।

(2) हज़रत इदरीस अ0:– आप का जन्म 1962

ई0 से लगभग 6500 वर्ष पूर्व हुआ था। आप हज़रत आदम अ0 की पचासवीं पीढ़ी में हैं। आप हज़रत नूह अ0 के परदादा (पूर्वज) थे। आप पर आकाश से अनेकों पुस्तकें उतरीं। आप ही ने लेखन विद्या, ज्योतिष विद्या, गणित विद्या, आकाश विद्या, शिल्प कला, नाप तौल, तराजू, तथा अस्त्र शस्त्र का निर्माण और सीने पिरोने के कार्यों का आविष्कार किया। आप बड़े ईश्वरभक्त थे। अपनी मृत्यु के पश्चात आप फिर जीवित हुए और फिरिश्तों के साथ नरक तथा स्वर्ग का भ्रमण किया और फिर स्वर्ग में रह गये।

मूर्ति पूजा का विकास

अनुमानतः हज़रत इद्रीस की मृत्यु के पश्चात ही लोग अपने प्रतिष्ठित पूर्वजों की मूर्ति बनाकर उनका स्मरण करने लगे। फिर धीरे धीरे आगामी वंशज के लोग उनको देवता अथवा ईश्वर मान कर उनकी मूर्ति बनाकर पूजने लगे।

(3) हज़रत नूह अ0:– आप का समय सन् 1962 ई0 से लगभग 6000 वर्ष पूर्व का है। आप की आयु कुल 2500 वर्ष की हुई आप लोगों को एकेश्वरवाद और उसकी उपासना को शिक्षा देते थे परन्तु लोग स्वीकर नहीं करते थे और आप को पत्थरों से मारते थे। लगभग 1000 वर्ष की शिक्षा के पश्चात केवल 80 पुरूष ईश्वर के भक्त (आस्तिक) हुए। (1) हज़रत नूह, (2) हाम, (3) साम, (4) याफ़िस, अन्तिम तीन व्यक्ति हज़रत नूह के पुत्र थे। उनकी 8 पत्नियां तथा उनके अनुयायियों में 72 व्यक्ति और ईश्वरभक्त हुए। तब आप ने शाप दिया कि हे परमात्मा इस पृथ्वी पर कोई काफ़िर (ईश्वर को न मानने वाला/नास्तिक) न रहे। परमात्मा का अदेश हुआ कि एक नवका का निर्माण करो। अतः आपने एक नवका बनाई।

नूह की नवका:–इस नवका की लम्बाई 1200 गज, चौड़ाई 800 गज, ऊँचाई 80 गज थी। उस में 80 पुरूष तथा स्त्रियां एंव कुल पशु पक्षियों का एक जोड़ा सवार हुआ।

तूफान–ए–नूह :– नवका मस्जिद–ए–कूफा के समीप बनाई गई और उसी स्थान से पहले पानी उबलना आरम्भ हुआ। फिर समस्त स्रोत उबलने लगे। आकाश से घनघोर वर्षा होने लगी प्रत्येक स्थान पर जल ही जल दृष्टिगोचर होने लगा। समस्त सृष्टि नष्ट हो गई फिर उसके पश्चात जल की बाढ़ घटी, लोगों ने भूमि पर पदार्पण किया और फिर धीरे–धीरे सृष्टि की पुनः रचना हुई। इसी कारण आप को आदम–ए–सानी (द्वितीय आदम) भी कहते हैं।

(4) हज़रत इब्राहीम अ0:– आपका जन्म 1962 ई0 से लगभग 4300 वर्ष पूर्व 'बाबिल' (हिल्ला, इराक़) में 'नमरूद' नामक राजा के काल में हुआ था। नमरूद ने स्वप्न देखा कि उसके नगर के किनारे एक ऐसा नक्षत्र उदय हुआ जिसकी ज्योति के सम्मुख चन्द्रमा तथा सूर्य का प्रकाश मान्द पड़ गया। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि तेरे राज्य में एक ऐसे बालक का जन्म होगा जो तेरे राज्य का सर्वनाश कर देगा। यह सुनकर नमरूद ने आदेश दिया कि स्त्री–पुरूष पृथक मृथक रहें और जो बालक भी उत्पन्न हो उसको मार डाला जाये। परन्तु जिसे ईश्वर रखे उसे कौन चखे। परमात्मा की इच्छा होकर रही। हज़रत इब्राहीम की माता गर्भवती हुई और प्रजनन के समय पर्वत की गुफा में गई जहां इब्राहीम अ0 का जन्म हुआ। आप गुफा के द्वार पर एक पत्थर रख चली आईं दूसरे दिन जब जाकर देखा तो हज़रत इब्राहीम मुख में अपनी उंगली डाले चूस रहे हैं। एक से दूध दूसरी से मधु की धारा बह रही है। वे एक श्वांस में इतना बढ़ते थे जितना कि एक साधरण बालक एक मास मे बढता है। जब 'नमरूद' का भय कुछ कम हुआ तो अप नगर में लाए गये। (इसी कथा से मिलती हुई कथा भगवान कृष्ण तथा अत्याचारी राजा कंस की भी है)

हज़रत इब्राहीम का अग्नि प्रवेश

नमरूद अपने को ईश्वर कहता था और हज़रत इब्राहीम एकेश्वरवाद का प्रचार करते हुए ईश–भक्ति का सन्देश देते थे अतः नमरूद आपका कट्टर शत्रु हो गया। उसने आदेश दिया कि लकड़ियां एकत्र करके अग्नि प्रज्वलित की जाए और उसमें हज़रत इब्राहीम को जला दिा जाए। लकड़ियां एकत्र की गईं उस पर तेल छिड़का गया फिर उसे आग लगा दी गई। जब अग्नि ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया तो उठती हुई ज्वाला में हज़रत इब्राहीम को 'गोफन' द्वारा फेंका गया। परन्तु ईश्वर की करनी ऐसी हुई कि अग्नि ठण्डी हो गई और हज़रत इब्राहीम जीवित रहे। (यह कथा हिरण्यकश्य तथा प्रहलाद की कथा से मिलती है)

हज़रत इस्माईल का बलिदान

एक बार हज़रत इब्राहीम ने स्वप्न देखा कि मैं अपने पुत्र इस्माईल को ज़िब्ह (बलि चढ़ाना) कर रहा हूं। इस स्वप्न का वर्णन आपने अपने पुत्र इस्माईल से किया। उन्होंने उत्तर दिया कि ईश्वर की इच्छानुसार आप बलि अवश्य चढ़ाइये। फिर हज़रत इब्राहीम ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल का हाथ पैर बान्ध कर लिटा दिया और अपने नेत्रों पर पट्टी बांध ली और बलि चढ़ाने के लिए छुरी गर्दन पर फेरने लगे। इसी बीच ईश्वर ने इस्माईल की बलि स्वीकर करते हुए एक दुम्बा (भेड़ा) भेज दिया। और इस प्रकार हज़रत इस्माईल बच गए और दुम्बा बलि चढ़ गया। इसी स्मृति में संसार के मुसलमान 10 बक़रीद को पशुओं (जिनपर कुरबानी जायज़ है) की बलि चढाते हैं अथवा कुरबानी करते हैं।

ख़ान–ए–काबा

जब हज़रत आदम अ0 इस धरती पर पधारे उसी समय ईश्वर ने एक याकूत का कुब्बा (घर) पृथ्वी पर उतारा फिर जब नूह का तूफ़ान आया तो वह आकाश पर उठा लिया गया। फिर हज़रत इब्राहीम और उनके पुत्र हज़रत इस्माईल अ0 ने मिलकर ईश्वर की आज्ञा से पूर्व स्थान पर काबा गृह का निर्माण किया। जिसके चारों ओर हज के समय हाजी गण 7 बार चक्कर लगाते हैं। इस क्रिया को 'तवाफ़–ए–काबा' कहते हैं।

ज़मज़म का जल

जब हज़रत इस्माईल का जन्म हुआ था उस समय उनकी माता जल की खोज में 'सफ़ा' पर्वत से 'मरवा' पर्वत तक सात बार दौड़ती हुई आयीं और गयीं परन्तु जल उपलब्ध न हो सका जब हज़रत इस्माईल प्यास के कारण एड़ियां रगड़ने लगे तो उसके घर्षण से जलस्रोत प्रवाहित होने लगा। वही जल ज़मज़म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी की स्मृति में मुसलमान हाजी 'सफ़ा' और 'मरवा' पर्वत श्रेणी के मध्य 7 बार दौड़कर आते और जाते हैं। इस क्रिया को 'सई' कहते हैं। जब उस स्थान पर जल उपलब्ध हो गया तो सर्व प्रथम 'जरहम' गौत्र के व्यक्ति मक्के में आकर बस गए तदोपरान्त अन्य व्यक्ति आते और बसते रहे।

(5) हज़रत मूसा अ0 :– आप का जन्म सन् 1962 ई0 से लगभग 3800 वर्ष पूर्व हुआ था। वह काल 'फिरऔन' नामक पापी राजा का राज्य काल था। फिरऔन के राज्य ज्योतिषि ने यह भविष्यवाणी की थी कि 'बनी इस्राईल' में एक बालक का जन्म होगा जो तेरे राज्य का विनाश कर देगा। उसने क्रोधित होकर यह आदेश दिया कि बनी इस्राईल के गौत्र में जितने बालक उत्पन्न हों मार डालें जायें। अनेकों निरपराध बालक बलि चढ़ गए परन्तु ईश्वर की करनी कुछ ऐसी हुई कि हज़रत मूसा अ0 का जन्म हआ। उनकी माता ने हत्या के भय से उनको एक लकड़ी के सन्दूक में बन्द करके नदी की गोद में अर्पित कर दिया। वह सन्दूक फिरऔन की पत्नी के हाथ लगा। वह निःसन्तान थी अतः वह उस बालक को राज महल में ले आई इस प्रकार हज़रत मूसा का पालन पोषण शत्रु के घर ही में होता रहा।

फ़िरऔन का विनाश

हज़रत मूसा भी एकेश्वरवाद और ईश्वर की भक्ति का उपदेश देते थे। यह बात फ़िरऔन को अप्रिय लगी क्योंकि वह स्वयं अपने को ईश्वर कहता था अतः उसने हजरत मूसा अ0 तथा उनके थोड़े से अनुयायियों पर आक्रमण कर दिय। ये व्यक्ति भयभीत होकर नील नदी की ओर भागे। जब हज़रत मूसा अ0 ने यह देखा तो उन्होंने अपना चमत्कारी डण्डा नील नदी पर मारा। नील नदी का जल दो भागों में विभाजित हुआ और बीच में मार्ग बन गया तथा वे लोग और हज़रत मूसा उस पार उतर गये। फिरऔन तथा उसकी सेना ने भी वही मार्ग पकड़ा परन्तु जब वे बीच धारा में पहुंचे तो वह मार्ग अदृश्य हो गया और वे सबके सब जल में डूब कर सदा के लिए नष्ट हो गए। यह कथा भी भारत में कृष्ण भगवान तथा कंस की कथा से मिलती जुलती है।

गऊ पूजा का विकास

हजरत मूसा अ0 अपने भाई हारून को अपना उत्तराधिकारी बनाकर 'तौरेत' (ईश्वर की ओर से आकाश से उतारे गये धार्मिक ग्रन्थों में से एक) लेने के लिए एक मास के लिए 'तूर' नामक पर्वत पर गये। परन्तु उनको वहां चालीस दिन लग गये। इसी बीच 'सामरी' नामक प्रसिद्ध जादूगर के बहकावे में आकर हज़रत मूसा अ0 के अनुयायी मिट्टी का बछड़ा बनाकर पूजने लगे हज़रत हारून ने बहुत समझाया परन्तु वे

न माने जब हज़रत मूसा अ0 आए तो अत्यन्त क्रोधित हुए।

(6) हज़रत दाऊद अ0:—आपका जन्म सन् 1962 ई0 से लगभग 3265 वर्ष पूर्व हुआ था। आप उस समय के राजा और पैग़म्बर भी थे। आप पर आकाश से 'ज़ुबूर' नामक पुस्तक (ग्रन्थ) उतारी गई थी। आपको ईश्वर ने ऐसी शक्ति प्रदान की थी कि लोहा मोम की भांति नर्म हो जाता था। वे प्रतिदिन लोहे की एक कवच बनाते थे और उसी को बेच कर अपना जीवन निर्वाह करते थे। राज्यकोष से अपने ऊपर कुछ व्यय नहीं करते थे। आप जब ज़ुबूर पढ़ने मैदान में जाते तो आपके पीछे समस्त यहूदी जिन्नात तथा जंगली पशु पक्षियों की पंक्ति सिर पर छाया किये रहती थी। आप जब ज़ुबूर पढ़ते थे तो सब मुर्छित हो जाते थे और पर्वतों में वाणी उत्पन्न होती थी।

(7) हज़रत सुलैमान अ0:—आप का जन्म सन् 1962 ई0 से अनुमानतः 3207 वर्ष पूर्व हुआ था। आप समय के राजा भी थे और पैग़म्बर भी। आपने कुल 700 वर्ष तथा 6 मास राज्य किया। मनुष्य, जिन्नात, पशु पक्षी तथा वृक्ष, वायु, जल, अग्नि तथा संसार की प्रत्येक वस्तु आपके शासन अधिकार (सत्ता) में थी। आपने लकड़ियों पर शीशों के एक हज़ार महल बनवाये थे। आपकी सेना लगभग 320 किलोमीटर की लम्बाई तथा 320 किलोमीटर चौड़ाई में फैल जाती थी। आपने एक सिन्हासन बनवाया था जो बहुत लम्बा चौड़ा था। उसके बीच में आप का मेज़ होता था और उसके चहु ओर 600 कुर्सियां सोने चांदी की रखी जाती थी। उन पर मुख्य मुख्य राज्य सहयोगी बैठते थे शेष व्यक्ति पीछे खड़े होते थे। उनके पीछे जिन्नात होते थे और सब के ऊपर पशु पक्षी पक्ति बनाकर छाया किए रहते थे। इन सब को वायु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती थी। ऐसे प्रतापी तथा तेजस्वी राजा का देहान्त इस प्रकार हुआ कि एक दिन आपने यह आज्ञा दी कि मेरी सेना तथा समस्त कर्मचारी मैदान में राजमहल के सामने उपस्थित हो जायें। परन्तु मेरे पास कोई भी न आए। मैं अपनी प्रजा का निरीक्षण करूंगा। आपकी आज्ञा का पालन हुआ। सब खड़े हो गए। इतने में आप राजमहल के ऊपर चढ़ कर डण्डे के सहारे खड़े हो गए। इतने में यम देवता पहुंचे सुलैमान अ0 ने कहा कि आज मैंने यह घोषण कर दी थी कि मेरे पास कोई न आए फिर आप कैसे आए? यम देवता ने उत्तर दिया कि मैं ईश्वर की आज्ञा से आपका प्राण हरण करने आया हूँ। और हजरत सुलैमान को बैठने का भी अवसर न देकर खड़े—खड़े ही उनका प्राण अपहरण कर लिया। आप का मृतक शरीर अधिक समय तक इसी प्रकार डण्डे के सहारे पर खड़ा रहा और प्रजा भी उनको खड़ा देख कर खड़ी आज्ञा का पालन करती रही। जब डण्डे में दीमक लगी और डण्डा टूट कर गिरा तो उसी के साथ उनका शरीर भी गिरा। यह देख कर प्रजा हटी कि अब उनके राजा का देहान्त हो चुका है। ईश्वर ने जैसा राज्य हज़रत सुलैमान को प्रदान किया था वैसा उसके पूर्व न किसी को प्रदान हुआ था और न अब किसी को प्रदान होगा।

(8) हज़रत ईसा अ0:—आपका जन्म 'बैत—उल—मुक़द्दस' (फ़िलिस्तीन) में हुआ था। आप ही के जन्म दिवस से ईसवी सन् का प्रारम्भ हुआ इसप्रकार आपके जन्म को 1968 वर्ष हो गये। ईसाई धर्म के अनुयायी आपको अन्तिम पैग़म्बर मानते हैं।

जन्म

आप कुमारी मरियम के गर्भ से ईश्वर की माया से पिता हीन उत्पन्न हुए थे। कुछ लोगों को यह शंका होती है कि बिना पिता के पुत्र कैसे उत्पन्न हो सकता है? इसका उत्तर यह है कि जब ईश्वर अपनी माया से हज़रत 'आदम' तथा 'हव्वा' को बिना माता पिता के उत्पन्न कर सकता है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बिना केवल पिता के हज़रत ईसा अ0 कैसे उत्पन्न हो गए।

आकाश गमन

यहूदी आपको कष्ट देते थे। एक दिन उन्होंने आप को पकड़ कर एक घर में बन्द कर दिया कि प्रातः काल आपको फांसी दे दी जायेगी। ईश्वर की कृपा से जिबरईल दूत आपको उस काल कोठरी के एक छिद्र के द्वारा निकाल कर आकाश पर ले गये। प्रातः काल जब सब यहूदी एकत्र हुए और आपको निकालने के लिए उनका नेता यहूदा घर के भीतर गया तो ईश्वर ने उसे ईसा अ0 की आकृति (समरूप) में परिवर्तित कर दिया। ईसा को न पाकर जब वह बाहर आया तो सब ने उसी को ईसा समझा और पकड़ कर 'सलीब' (Cross) पर लटका कर फांसी दे

दी और ऊपर से सौ कोड़े भी मारे। इसके पश्चात ईश्वर ने फिर उसको अपनी पूर्व की आकृति में परिवर्तित कर दिया।

हज़रत ईसा अ0 हज़रत 'महदी' अ0 के ज़हूर (प्रकटन) के पश्चात आकाश से पृथ्वी पर पधारेंगे और उनके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। समस्त ईसाई मुसलमान हो जायेंगे। 40 वर्ष जीवित रहकर आपकी मृत्यु होगी। आप ही के ऊपर इंजील अथवा बाइबिल नामक पुस्तक आकाश से उतरी थी जो ईसाइयों का धार्मिक ग्रन्थ है।

यहूदी : ये हज़रत मूसा अ0 के अनुयायी हैं और उनको अपना पैग़म्बर मानते हैं।

शैतान : यह एक आकाश दूत (फरिश्ता) था जो आकाश पर फ़रिश्तों के झुण्ड में रहकर ईश्वर की उपासना किया करता था। उसकी उत्पत्ति अग्नि धातु से हुई थी। जब हज़रत आदम का जन्म हुआ तो ईश्वर ने सब फ़रिश्तों से उनके आगे अपना मस्तक झुकाने (दण्डवत) के लिए कहा सबने स्वीकार कर लिया परन्तु शैतान ने यह कह कर कि आदम का जन्म तो मिट्टी से हुआ और मेरा अग्नि से अतः यह मुझसे श्रेष्ठ नहीं हो सकता, अपना मस्तक झुकाने से इनकार कर दिया। इसी कारण वह स्वर्ग से निकाल दिया गया। परन्तु जाते समय इतनी आज्ञा ले कर गया कि मैं संसार वासियों को बहका कर पथ भ्रष्ट करता रहूंगा। ईश्वर ने यह कहकर कि मेरे मुख्य बन्दे (दास) जो होंगे वे कभी तेरे बहकावे में न आयेंगे उसको आज्ञा दे दी।

(9) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0:– आपका जन्म 17 रबी–उल–अव्वल तदानुसार सन् 571 ई0 में मक्के की पवित्र भूमि पर हुआ था। आपके पिता हज़रत अब्दुल्लाह आपके जन्म के पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये थे। आपका पालन पोषण आपके दादा हज़रत अबदुल मुत्तलिब के द्वारा हुआ। जब आपके दादा का स्वर्गवास सन् 579 ई0 में हो गया तो आपकी देख–रेख आपके चाचा हज़रत अबूतालिब ने की। सन् 610 ई0 में चालीस वर्ष की आयु में आपने इस्लाम धर्म का प्रचार नवीन रूप से खुल्लम खुल्ला करना आरम्भ किया जिसके लिए आप भेजे गये थे। जब आपने इस्लाम धर्म को स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया तो पुरूषों में सर्व प्रथम हज़रत अली अ0 (हज़रत अबूतालिब के पुत्र) ने इसे स्वीकार किया। तथा स्त्रियों में सर्वप्रथम मुहम्मद साहब की पत्नी हज़रत 'खदीजा' ने इस्लाम धर्म स्वीकर किया। हज़रत अली अ0 की आयु उस समय केवल 10 या 11 वर्ष की थी। सन् 620 ई0 में आप के संरक्षक तथा चाचा का भी देहान्त हो गया। इस काल में अत्यन्त लघु संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया।

संवत हिजरी : (सन् 622 ई0) जब आपके चाचा हज़रत अबू तालिब का स्वर्गवास हो गया तब मक्का के कुफ्फार (नास्तिक गण) आप को तथा अपके अनुयायियों को अधिक कष्ट देने लगे। तब पैग़म्बर साहब ने जाफ़र–ए–तय्यार अ0 को कुछ व्यक्तियों के साथ हबश देश में भेज दिया तथा कुछ व्यक्तियों को मदीना भेज दिय। एक रात कुफ्फार ने पैग़म्बर साहब की हत्या करने की चेष्टा में तलवार लेकर आपके मकान का घेराव किया। ईश्वर ने अपनी लीला से आप का प्राण बचा लिया और आपको रात्रि के समय मक्का से मदीना जाने की आज्ञा दी। आप मदीने चले गये और अपने बिस्तर पर हज़रत अली अ0 को सुला दिया तदोपरान्त आप मदीने को प्रस्थान कर गए इसी प्रस्थान को हिजरत कहते हैं अतः उसी समय से संवत् हिजरी का प्रारम्भ हुआ।

मदीने में निवास : पैग़म्बर साहब मदीने में सन् 622 से 632 ई0 अर्थात् सन् 1 हिजरी से सन् 10 हिजरी तक रहे। परन्तु मक्का निवासी कुफ्फार ने मुसलमानों को चैन से बैठने न दिया और उन्हें विभिन्न प्रकार का कष्ट देना आरम्भ किया। सेना लेकर कई बार आक्रमण भी किया। अन्त में विवश होकर मुहम्मद साहब ने सुरक्षा के लिए अनेकों संग्राम/जिहाद (धार्मिक युद्ध) भी किये। 28 सफर सन् 11 हिजरी तदानुसार सन् 633 ई0 में 63 वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हुआ।

पैग़म्बर साहब के मोजिज़े (चमत्कार):–ईश्वर की ओर से अरबी भाषा में आपके ऊपर 'कुरान' का उतरना है जो ईश्वर के आदेश, उपदेश, भूत तथा वर्तमान काल की घटित घटनाओं एवम् भविष्य काल की भविष्यवाणी तथा अन्तरगत कथाओं का संग्रह है जो हज़रत जिबरईल फ़रिश्ते द्वारा थोड़ा थोड़ा कर के उतारा गया था। यह ग्रन्थ क़यामत तक शेष रहेगा। यह इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ धर्म ग्रन्थ है इसके समस्त

शब्द तथा वाक्य ईश्वर के हैं।

कुरआन के गुणः– (1) निरन्तर अध्ययन करने पर भी मन विचलित नहीं होता (ऊबता नहीं)। (2) कुरान जैसे वाक्य उसके विरोधी आज तक न ला सके। (3) उसके वाक्य तथा 'सूरे' (अवतरण) प्रभावशाली, दुख हरण एंव लाभदायक है। (4) जहां से चाहे अध्ययन करें अर्थ में कोई त्रुटि नहीं पड़ती और मतभेद नहीं होता।

शारीरिक मोजिज़े (चमत्कार) : (1) आपका मस्तक नूर (प्रकाश) से दमकता रहता था। (2) शरीर में सुगन्ध थी। (3) धूप तथा प्रकाश में आपके शरीर का प्रतिबिम्ब धरती पर नहीं पड़ता था। (4) साथ चलने में आप सभी व्यक्तियों से सदा ऊंचे प्रतीत होते थे। (5) कोई पक्षी आपके सिर के ऊपर से होकर नहीं उड़ता था। (6) आप जिस प्रकार अपने सामने की वस्तुओं को देखते थे उसी प्रकार पीठ के पीछे की वस्तुओं को भी देखते थे। (7) जिस स्थान पर थूक देते थे पानी से भर जाता था। (8) विभिन्न प्रकार की समस्त भाषाओं के ज्ञानी थे और प्रत्येक भाषा में वार्तालाप करते थे। (9) अपनी अंगुली के संकेत से चन्द्रमा को दो भागों में विभाजित कर दिया था। (10) ठीकरे आपके हाथ में तस्बीह पढ़ते थे जिसका स्वर लोग सुनते थे। (11) जिस सवारी के पशु पर आप सवार होते थे वह आपका वशीभूत एंव आज्ञाकारी हो जाता था। (12) नर्म भूमि पर आपके पदचिन्ह नहीं बनते थे परन्तु कठोर भूमि तथा पत्थरों पर आप के पदचिन्ह बन जाते थे। (13) शारीरिक बल एंव शक्ति में आपके मुक़ाबले का कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। आपके जन्म के समय आपकी नाड़ कटी हुई थी तथा खतना (मुसलमानी) हुआ उत्पन्न हुए थे। (14) आपको कभी स्वप्नदोष नहीं हुआ। इत्यादि।

जन्म काल के मोजिज़े (चमत्कार) : (1) आपके जन्म के समय ईरानी शासक 'क़िसरा' द्वारा बनाया गया 'ऐवान–ए–क़िसरा' जिसका निर्माण अत्यन्त सुदृढ़ हुआ था और मदाईन (बग़दाद) की पूर्व दिशा में स्थापित है कंपित होकर थरथराने लगा और उसके चौदह कंगूरे (बुर्जी) गिर पड़े। बीच से उसकी दीवार फट गयी और पृथवी तक उसमें दरार पड़ गयी। वह ऐवान आज तक उसी प्रकार शेष है। जिसका मन चाहे जाकर देख सकता है। (2) एक विशाल भवन जो दजला नदी के किनारे निर्मित था, नष्ट हो गया वहां दजला नदी का पानी बहने लगा। (3) एक छोटी नहर जहां ईरानी शासक पूजा किया करता था सूख गई। अब उस स्थान पर नमक की खान है। (4) फारस (ईरान) के पार्सियों का अग्नि कुण्ड जो एक हज़ार वर्ष से जल रहा था उस रात्रि को स्वयं बुझ गया। (5) वर्षो की सूखी हुई एक नहर में जल बहने लगा इत्यादि।

अन्य मोजिज़े (चमत्कार):– (1) जन्म के समय आकाश से अनेकों नक्षत्रों का गिरना। (2) आपके परिवार वालों के लिए आकाश से भोजन का उतरना (3) आप जिस वृक्ष को बुलाते थे वह चला आता था। (4) आपके संकेत से मूर्तियां मुंह के बल गिर पड़ती थी। (5) आपको पत्थर तथा वृक्ष प्रणाम करते थे। (6) सिंह, मुर्ग, भेड़िये तथा बकरी इत्यादि आपसे वार्तालाप करते थे। (7) विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु आपकी रिसालत (पैग़म्बरी) होने के साक्षी थे। अर्थात् उन्होंने गवाही दी थी। (8) आपकी प्रार्थना से मृतक जीवित हो जाते थे, नेत्र रहित व्यक्तियों के नेत्रों में प्रकाश आ जाता था। रोगी स्वस्थ हो जाते थे। (9) आप शत्रुओं पर विजयी होते थे और आपकी सहायता के लिए आकाश से फ़रिश्ते उतरते थे इत्यादि। (10) कतिपय मनुष्यों की आवश्यकताओं को कहने के पूर्व ही पूर्ण कर देते थे। (11) मुनाफिक (कपटी व्यक्ति) जो कुछ अपने घरों में करते थे या उनके हृदय में जो भावनाएं होती थीं उनको बता देते थे। (12) अनेकों भविष्यवाणी की जो समय पर सत्य सिद्ध हुईं। इत्यादि।

(13) शारीरिक मेराज (आकाश गमन):– आपको इसी शरीर के साथ ईश्वर मक्का से 'मस्जिद–ए–अक़सा' तक (जो फिलिस्तीन में है) फिर वहां से ''सिदरत–उल–मुन्तहा'' (अन्तिम बेरी का पेड़) तक फिर वहां से आकाश तक ले गया। वहां ईश्वर ने आपकी अपनी गुप्त और रहस्य मयी बातें बताईं। आपने 'बैत–ए–मामूर' तथा 'अर्श' के नीचे इबादत (ईश्वरोपासना) की। स्वर्ग में गये वहां पैग़म्बरों तथा नबी की रूह (आत्मा) से भेंट की और फिर कुछ ही क्षण बाद उसी स्थान पर पंहुचा दिए गए।

(जारी.......................................)



ज़िन्दगी का सिस्टम

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : 11

दुंनिया में लोगों की उम्रें अलग–अलग हैं, किसी की उम्र सत्तर साल हुई तो उसे पचपन साल इबादत और भक्ति के लिए मिले और किसी की उम्र बीस ही साल की हुई तो उसको सिर्फ़ पांच साल मिले । अगर ऊपरी तौर पर देखा जाए तो दूसरा जिसे सिर्फ़ पॉच साल इबादत भक्ति के लिए मिले उसके काम उस शख़्स के बराबर कभी नहीं हो सकते जिसे इबादत भक्ति के लिए पचपन साल मिले । मगर नीयत वह चीज़ है जो इन दोनों में बराबरी (Balance) पैदा कर देती है । कुदरत की तरफ़ से इसको मौक़ा कम मिला, उसको ज़्यादा मगर हो सकता है कि इसे इबादत और भक्ति का जोश और साधना का वलवला उससे कई गुना ज़्यादा हो तो इसकी कम वक़्त में की गई इबादत उसकी ज़्यादा वक़्त में की गई इबादत से बेहतर होगी। यही वह राज़ है जिसे इमाम (अ0) ने इस ऐतराज़ के जवाब में ब्यान किया है कि मोमिन जन्नत में हमेशा–हमेशा रहेंगे और काफ़िर जहन्नम में सदा के लिए डाले जाएंगे ।

ये जज़ा, (फल) और सज़ा हमेशा के लिए है जबकि कामों की एक सिमटी सीमित उम्र में थे, जो ख़त्म हो गई, इमाम (अ0) फ़रमाते हैं– "जहन्नम वाले जहन्नम में इसलिए हमेशा–हमेशा रहेंगे क्योंकि दुनिया में उनकी नीयत ये थी कि अगर वह हमेशा दुनिया में रहें तो हमेशा गुनाहों पापों में ही जिन्दगी बितायें और जन्नत वाले जन्नत में इसलिए हमेशा रहेंगे क्योंकि उनका इरादा ये था कि अगर दुनिया में वह हमेशा रहें तो बराबर ख़ुदा की इताअत और भक्ति ही करते रहेंगे। इनकी नीयतों की वजह से दोनों की सज़ा और इनाम हमेशा हमेशा रहेगा। बेशक नीयत की सच्चाई काम से मिलना चाहिए। अगर इन्सान को किसी अच्छे काम को करने के बाद पछतावा हो जाए या सकत और बस होते हुए भी अच्छे कामों को पूरा करने में सुस्ती और ढील से काम ले तो उसका काम खुद ही उसकी नीयत की कमज़ोरी का सबूत होगा। लेकिन अगर नीयत अच्छी रखे और अपने भर से कोशिश और जतन भी करे मगर ज़रिये के ना हो पाने या अड़चनों की वजह से वह उस काम को पूरा न कर पाए, तो अल्लाह के यहाँ से उसकी 'नीयत' पर सवाब दिया जाएगा बल्कि ज़मीर वह चीज़ है जिसकी वजह से अगर इन्सान के अन्दर सच्चा भाव और पूरा एहसास व वलवला हो तो बहुत से उन कामों का जिनका समय बीत चुका है, इन्सान अपने अन्तःकरण् की वजह से उसके सवाब में साझी होगा। आप इस बात को इमाम (अ0) की इस बात से समझ सकते हैं, जिसे इमाम अमीरूल मोमनीन (अ0) ने उस वक़्त फ़रमाया जब जमल की जंग में ख़ुदा ने उनको विजय प्रदान की और आपके साथियों में से एक ने आपसे कहा कि "मुझे आरजू है कि काश मेरा भाई वह शख़्स हमारे साथ होता और वह देखता कि ख़ुदा ने (हमें) किस तरह आपके दश्मन पर कामयाबी अ़ता की है, "तो आपने फ़रमाया –" *अ हुआ अख़ीका मअ़ना*" "क्या तुम्हारा भाई हमारे दोस्तों में से है? उसने कहा कि हां वह आपके दोस्तों में से है । हज़रत (अ0) ने फ़रमाया – " तो फिर ख़ुदा की क़सम वह मेरे साथ था, और हमारे साथ हमारे सेनादल में बहुत से वह लोग थे जो अभी मर्दो के सुल्ब पीठ में और औरतों के पेट में हैं, वक़्त उनको बाहर सामने लायेगा और ईमान विश्वास को उनके द्वारा ताक़त मिलेगी ।

ये जो आपको शिक्षा दी गई है कि आप कर्बला की घटना के याद आने पर कहिये कि –

"या लैतना कुन्ना मअ़–कुम फ़न्–फ़ूज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमा "

काश हम आप के साथ हाते और महान कामयाबी की शोभा पाते। " ये सिर्फ़ (शब्द) ही शब्द नहीं हैं बल्कि अस्ल में दिल में उस तमन्ना का पैदा करना है और इस जज़्बे भाव और वलवले का नतीजा

ये है कि आप उस सवाब में भागी हों, मगर याद रखना चाहिए कि अगर दिल में उस महान संग्राम (कर्बला) में भाग लेने का जज़्बा है तो वह कर्म से ही साबित हो सकता है कि हमारे सामने जो दीनी मसले आएं उनमें अपने फर्ज़ का एहसास करें, चाहे उनमें कितनी ही कड़ाई और कष्ट क्यों न हो, लेकिन अगर मामूली–मामूली से इम्तेहान में हमारे पैर लड़खड़ा जाते हैं (यानी जरा सी कठिनाई में हम अपने फर्ज़, कर्तव्य को भूल जाते हैं) तो कभी भी ये नहीं माना जा सकता कि हमारे दिल में कर्बला जैसे महान संग्राम में भाग लेने का सही वल्वला और जोश है, इस सूरत में ये सिर्फ़ ज़बानी बातें होंगी जिनका न कोई फ़ायदा है और न कोई नतीजा ।

इबादत (भक्ति) का मक़सद

मैने कहा कि नीयत में दो चीज़ें हैं। कौन सा काम कर रहा है ? और किसके लिए कर रहा है। पहली चीज़ तो आसान है लेकिन दूसरी चीज़ बहुत कठिन, इसमें कम से कम जो चीज़ ज़रूरी है वह ये कि दुनिया का कोई मक़सद नज़र में ना हो या फिर काम ख़ुदा के अलावा किसी और की चाहत पाने के लिए न हो, लेकिन उसके आगे की बात ये है कि आख़िरत का कोई मक़सद नज़र में हो यानी आख़िरत के सवाब का पाना हो या अज़ाब से बचाव, जहां तक अ़मल के सही होने का सवाल है ये नहीं कहा जा सकता कि इससे इबादत ग़लत हो जाएगी, क्योंकि क़ुर्आन मजीद में सवाब व अज़ाब, जन्नत व जहन्नम का बयान इसलिए है कि कमज़ोर जी वालों को अ़मल के लिए आमादा किया जा सके । ये ख़ुदावन्दे आलम का एक करम है कि उसने इन चीज़ों के ज़रिए इबादत से हमकों क़रीब किया है। अगर इबादत के वक़्त इन चीज़ों का मद्देनजर होना नाजाएज़ होता और अ़मल होता तो इन चीज़ों का बयान करना और ये ख़ुश करने वाले (जन्नत के) वादे या अज़ाब का डर, ख़ुद दया व एहसान के ख़ेलाफ होता, क्योंकि क़ुदरती तौर पर इन्हीं चीज़ों के बयान की बदौलत हमारे मन में ये ख़याल ज़्यादा पैदा होते हैं, अगर ऐसा होता तो हमारे कामों के ग़लत होने की वजह ख़ुदा होता ।

बेशक काम की ऊँचाई और कमाल ये है कि इस नरह के सही मक़सद भी इन्सान के सामने हों और वह काम को सिर्फ़ 'ख़ुदा की मरज़ी पाने' के लिए करे। ये बहुत ऊँचा दरजा है जहां तक हर इन्सान नहीं पहुंचता है ।

अमीरूल मोमेनीन (अ0) ने इसको इन शब्दों में बयान किया है :– ''एक गुट वह है जो ख़ुदा की इबादत भक्ति सवाब की उम्मीद मे करता है, ये व्यापारियों की सी इबाादत है और एक गुट वह है जो सज़ा के ख़ौफ़ से ख़ुदा की इबादत करता है, ये गुलामों की सी इबादत है, और एक गुट वह है जो सिर्फ़ उसकी नेमतों का लेहाज़ करते हुए ख़ुदा की इबादत करती है, ये आज़ाद लोगों की इबादत है।'' इसी को आपके बाद दूसरे इमामों (अ0) ने अपने–अपने लफ़ज़ों में बयान किया है। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) फ़रमाते हैं :–'' इबादत तीन क़िस्म की होती है, कुछ वह लोग हैं जो ख़ुदा की इबादत डर के मारे करते हैं, ये गुलामों की सी इबादत है, और कुछ लोग वह लोग है जो सवाब की चाहत में इबादत करते हैं, ये मजदूरों की इबादत है और कुछ वह लोग हैं जो ख़ुदा की मुहब्बत में उसकी इबादत करते हैं, ये आज़ाद लोगों की इबादत है और यह इबादत की बेहतरीन क़िस्म है ।''

दूसरी हदीस में इरशाद फ़रमाया है – '' लोग तीन तरह से ख़ुदा की इबादत करते हैं, एक गरोह वह है जो सवाब की ख़्वाहिश में ख़ुदा की इबादत करता है ये लालचियों की सी इबादत है, और इसका नाम लालच और हवस है, दूसरे वह लोग हैं जो जहन्नम की आग के डर से ख़ुदा की इबादत करते हैं, ये गुलामों की सी इबादत है और सिर्फ़ डर का नतीजा है लेकिन मेरा रास्ता है कि ख़ुदा की इबादत हो उसकी (ख़ुदा की) मोहब्बत में । ये इज़्ज़त वाले लोगों की इबादत है''

बेशक इस तरह की इबादत वह ऊँचाई का दरजा है जो सिर्फ़ ख़ुदा के ख़ास बन्दों को ही मिलता है, यह वह बात है जिसकी वजह से अमीरुल मोमेनीन (अ0) ख़ुदा से निवेदन करते थे – '' मैने तेरी इबादत तेरी जन्नत के लालच या तेरी आग के डर से नहीं की, मैने तुझ को इबादत के लायक़ पाया इसलिये इबादत की।''

वहां नज़र में सिर्फ़ ख़ुदा की मरज़ी थी इसलिए मुनाजात (चुप दुआ) में कहते थे कि '' अगर तेरी ख़ुशनूदी इसमें जानूँ कि तू मुझे जहन्नम की आग

में कर दे तो वह जहन्नम मेरे लिए जन्नत है। "

इबादत में खरेपन की ज़रूरत : नीयत में खरापन बहुत ज़रूरी है, इसके मानी ये हैं कि इबादत में सिवाए 'खुदा' के किसी का लेहाज़ न हो । कुर्आने मजीद में है *"मुखलिसी–न लहुददीन"* यानी" मोमेनीन इबादत को खालिस (सिर्फ) खुदा के लिए अन्जाम देते हैं। "यहां 'दीन' के मानी कहना मानना व इबादत (भक्ति) है, जैसे नमाज़ को दीन के मानी में बयान किया गया है, इसी तरह इस आयत में कि *" व मा कानल्लाहु–लि –युज़ी–आ दी–नकुम"* यानी " खुदा तुम्हारी इबादत व कहना मानने को बर्बाद नहीं करेगा "। खरेपन के मक़ाबले में एक चीज़ है जिसका नाम है दिखावा । इसके मानी ये है कि इन्सान किसी दूसरे को दिखाने या सुनाने के लिए इबादत करे। अब इसमें पहली सूरत तो ये है कि असली मक़सद सिर्फ़ दिखाना और सुनाना ही हो, ऐसी सूरत में वहां अल्लाह के लिये का बिल्कुल पता नहीं है मगर दूसरी सूरत ये है कि मक़सद दोनों ही चीज़ें हों यानी ये कि इस काम को वह खुदा के हुक्म की वजह से कर रहा है और उसके साथ ये भी कि दूसरे लोग उसको बहुत इबादत करने वाला समझें। ये चीज़ भी काम के सही होने के उलटी है । इबादत में दिखावा ही वह चीज़ है जिसे मज़हब में छिपा हुआ शिर्क (खुदा का साझी मानना) कहा गया है। ऐसे काम का कोई सवाब नहीं हो सकता ।

हदीस में है कि खुदा इरशाद फ़रमाता है "मैं बहुत अच्छा शरीक हूँ कि जब मेरे साथ किसी को शरीक कर दिया जाता है तो मैं अपना हिस्सा भी उसी शरीक ही को दे देता हूँ और मैं बस उस अ़मल को कुबूल कर लेता हूँ जो मेरे लिए खरा शुद्ध हो।"

ये बाहरी दिखावे का भाव अक्सर इस तरह छिपा हुआ होता है कि खुद इन्सान को भी उसका अन्दाज़ा नहीं होता। वह समझता है कि मेरे काम में कोई नफ़सानी मतलब नहीं छिपा है मगर मामूली –मामूली बातों से उसके इस ख़्याल की क़लई खुल जाती है कि इस में कितनी सच्चाई है । मान लीजिए एक आदमी नमाज़ घर में पढ़ता है तो सरसरी तौर पर बहुत तेज़ी के साथ ख़त्म कर देता, लेकिन एक–दो आदमी आ गए तो अब रूक रूक कर और ठहर ठहर कर नमाज़ पढ़ने लगता है। इसी से पता चल जाएगा कि इसमे दिखलावे का जज़्बा होता है। कोई सामने हुआ तो उसने बोल को सही अरबी उच्चारण (बोलें) से एहतियात के साथ पढ़ना शुरू कर दिया। मालूम हुआ कि वह चाहता है उसकी क़िरअत व तजवीद (अरबी पढ़ने का तरीक़ा और क़ायदा) का दिखावा (प्रदर्षन) हो । इसी तरह की बहुत सी ऐसी सूरते हैं जिनकी तरफ़ अगर इन्सान की तवज्जो हो तो उसे अपने काम की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी ।

इस को अमीरूल मोमेनीन (अ0) ने यूँ बयान फ़रमाया है कि "दिखावों की तीन पहचानें हैं –

1–जब लोग (सामने) हों तो काम करने में उसका खूब मन लगे।

2–और जब अकेला हो तो सुस्त हो जाए ।

3–और वह इस बात को पसन्द करता हो कि लोग हर बात में उसे सराहें।

नाम और तारीफ़ की ख़्वाहिश इन्सान के काम के लिए एक बेइलाज बीमारी है जिससे काम की खेती बिल्कुल बर्बाद हो जाती है।

बेशक अगर इन्सान का मक़सद साफ़ हो और वह अपने काम को खरेपन से सिर्फ 'अल्लाह' के लिए करे फिर अगर लोग उसकी तारीफ़ भी करें और उसका नाम भी हो तो ये ख़ुदा की नेमत होगी जो उसने बन्दे को दी है। इस सूरत में उसकी दुनिया भी संवर जाएगी और वह आख़िरत में भी कामयाब है ।

मज़दूरी (पारिश्रमिक) का मसला

इबादत के सही होने और काम में खरेपन की पिछली कसौटी (Standard) को देखते हुए कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन के सही होने के लिए देखने में तो बड़ी मुश्किल महसूस होती है, यानी वह रोज़े और नमाज़ें जो मरने वालों की तरफ़ से मज़दूरी (पैसे) देकर अदा कराई जाती हैं, ये ज़ाहिर है कि यहां काम करने वाले के लिए वह तय की गयी रक़म ही है जो उससे काम करवा रही है । ऐसे में तो उस इबादत को ग़लत मानना चाहिए और जब वह इबादत ग़लत हुई तो जिसकी तरफ़ से वह की गयी उसको फ़ायदा क्या मिला ? मगर ध्यान करने से मालूम होता है कि वह जो काम कर रहा है उसकी दोहरी हैसियत (Position) है। पहली नायब की यानी दूसरे की तरफ़ से काम कर रहा है, इस लेहाज़ से कि वह कार्यवाहक या किसी के बदले में काम कर रहा है और यह काम वह है जो सीधा उस मरने वाले से

जुड़ा है ।

दूसरी वह हैसियत है जो दूसरे की तरफ़ से उसके बदले काम करने) की वजह से इसमें पैदा होती है और इस लेहाज़ से ये वह है जिसकी ओर से काम कर रहा है यानी जो काम हो रहा है वह इसके अपने का नहीं है बल्कि उस का है जिसका बदल है और वह 'इबादत' जिसका लगाव मरने वाले की तरफ़ है वह ' इबादत 'दूसरे का बदला होना नहीं है बल्कि नमाज़ रोज़ा वग़ैरह इस तरह की इबादतें हैं। वह 'पहला' काम जो बदले होने से यह कर रहा है यानी उस रूपये की वजह से वह दूसरे की तरफ़ से काम कर रहा है, लेकिन वह नमाज़ रोज़ा जिसको ये करने वाले की तरफ़ लगाव देकर कर रहा है उसके लिए इसको एहसास है कि वह दूसरे की तरफ़ से अ़मल कर रहा है। चूँकि मज़दूरी (पैसा) लेकर दूसरे की तरफ़ से कर रहा है, इसलिये इसे बदले के होने की वजह से सवाब का हक़ नहीं है लेकिन जिस मरने वाले की तरफ़ से 'कुर्बत' की नीयत के साथ वह काम हो रहा है उसे इस का सवाब जरूर मिलेगा ।

ये भी साफ़ होना ज़रूरी है कि ये क़ज़ा (छूट जाना) का हुक्म मरे हुए की तरफ़ से दर असल एक मुस्तक़िल (Regular) इबादत है जो ख़ुदा की तरफ़ से बड़े बेटे के ज़िम्मे वाजिब की गयी है या दूसरे लोगों के लिए सुन्नत है। इससे मरने के बाद एक तरह की सहकारिता (Co-operation) और आपसी बराबरी का एहसास पैदा करना भी मक़सद है वरना वह कमी जो इन्सान से ज़िन्दगी में वाजिब के करने में हुई है वह इस क़ज़ा की वजह से बिल्कुल नज़र अन्दाज़ हो जाने के क़ाबिल नहीं है, वरना फिर तो ऐसे लोग जिनकी औलाद नेक है वह जो इस भरोसे पर कि हमारा बैटा तो हमारे बाद हमारी नमाज़ और रोज़े कर देगा और वह जान बूझ कर काम और फ़र्ज़ (धर्म) को करने में कमी करें, या जो लोग पैसे वाले हैं वह ज़िन्दगी भर नमाज़ व रोज़ा न करें और आख़िर वक़्त में ये वसीयत करें कि हमारे माल में से नमाज़ रोज़ा अदा कर दिया जाए, हरगिज़ नहीं । ये समझना हरगिज़ सही नहीं है, अपने अ़मल का हर कोई खुद ज़िम्मेदार है।

हाँ ! नेक मन के साथ अगर कोई अपने नमाज़ रोज़े के क़ज़ा का खुद ही इरादा रखता है लेकिन इत्तेफ़ाक़ से ऐसा हआ कि उसे मौक़ा ही नहीं मिला और मौत का फ़रिश्ता सामने आ गया, उसे मजबूर होकर मरते वक़्त वसीयत कर दी या औलाद से कह दिया, उस वक़्त ख़ुदा के फ़जल और दया से ये उम्मीद रखना चाहिए कि वह उसके नेक इरादे की बदौलत उसको माफ़ कर दे और उससे पूछ–ताछ न करे । मगर इन्सान के लिए अपने फ़र्ज़ को अदा करने में जान बूझ कर कमी करना हरगिज़ माफ़ी के क़ाबिल नहीं है और ख़ुदा की अदालत में वह ज़रूर सज़ा का मुस्तहक़ या पात्र है। दूसरी चीज़ जिसका लेहाज़ ज़रूरी है वह है पेशनमाज़ी, ज़ाकिरी, दीनी मदरसों में पढ़ाना और ऐसी चीज़ों की उजरत (पैसे) लेकर पूरा करना जो दीनी फ़र्ज़ / कर्तव्य से जुड़ी हैं।

इस सिलसिले में यह बात तय है कि वाजिब कामों पर उजरत लेना हराम (निषेध) है, जैसे कोई पॉच वक़्त की नमाज़ मज़दूरी लेकर पढ़े तो ये मज़दूरी नाजाएज़ होगी और हराम पैसा कहलायेगा। इसी तरह वाजिबे किफ़ाई (जो सब पर वाजिब हो मगर कोई कर दे तो दूसरों पर से वाजिब हट जाय। अगर कोई न करे तो सब को गुनाह / पाप होगा) जैसे ग़स्साली (मुर्दे को गुसल देना) क़ब्र खोदना और नमाज़े जनाज़ा, इन तमाम चीज़ों को उजरत लेकर अदा करना सही नहीं है क्योंकि ये हर एक पर वाजिब है, और जो भी इन्हें कर दे वह एक फ़र्ज़ और कर्तव्य अदा करता है।

इसी तरह जब जान बचाने का मामला हो तो 'डाक्टरी' भी इसी मसले में आ जाती है। यानी कोई ऐसा मौक़ा जहां उसी एक डाक्टर की राय और उसके इलाज ही पर मरीज़ की जान की हिफ़ाज़त निर्भर है तो वहां उस डाक्टर पर उस मरीज़ का इलाज करना बिल्कुल फ़र्ज़ है और ऐसे में मज़दूरी (पैसे) का कोई सवाल करना किसी तरह जाएज़ नहीं है। इसी तरह खुदा के बन्दों को सच्चा रास्ता दिखाने की हिदायत उस हद तक कि जो वाजिब है निश्चय उस पर मज़दूरी लेना हराम है ।

(जारी......................................)



ख़बर नामा

मस्जिद अक्सा पर बार बार हमला विभाजित करने का षड़यन्त्र : शेख रायद सलाह

अधिकृत फ़िलस्तीन में सक्रिय इस्लामी आन्दोलन सुप्रिमो शैख रायद सलाह ने हालिया दिनों में मस्जिदे अक्सा पर इज़राइली सैनिकों के आक्रमण पर कड़ी आलोचना करते हुए कहा है कि किब्ला-ए-अव्वल पर बार बार के इस आक्रमण का उद्देश्य इसे यहूदियों और मुसलमानों के बीच विभाजित करने की योजना को व्यहारिक रूप देना है। मीडिया से बात चीत में उन्होंने कहा कि मस्जिदे अक़्सा पर तेज़ होते इसराइली सैनिकों का आक्रमण अत्यन्त घातक हैं। एक ओर इज़राइली नेता तथा यहूदी पुनर्वासन मस्जिद में घुस कर यहूदी परम्पराओं को अदा करने का मामूल बनाते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर मीड़िया उग्रवाद यहूदी संस्थाओं की ओर से मस्जिद अक्सा को यहूदियों और मुसलमानों में विभाजन का अभियान जोर पकड़ गया है। यहूदी निर्वसनों के हमलों के बाद इज़राइल की अगली मांग होगी कि मस्जिद अक्सा में मुसलमानों के साथ-साथ यहूदियों को भी पूजा पाठ करने का पूर्ण अधिकार है। अतः मस्जिद में इबादत (पूजा) के लिए दोनों समुदाय के लिए समय विशिष्ट किया जाए। शैख रायद सलाह ने कहा कि इजराइल यहीं तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि अगले मरहले में इज़राइल नउज़बिल्लाह मस्जिद अक़्सा को ध्वस्त कर उसके स्थान पर हैकल सुलेमानी निर्माण कराने का प्रयत्न करेगा। उन्होंने कहा कि मस्जिद अक़्सा के स्थान पर हैकल सुलैमानी निर्माण कराने की बातें पहली बार नहीं की जा रही हैं बल्कि 1967 में अलकुदुस पर कब्ज़ा करने के बाद से इज़राइल अपनी इस योजना की पुनरावृत्ति करता चला आ रहा है।

इरान ने उपसागर कैस्पियन में युद्ध पोत स्थापित किया

ईरान ने स्थाई रूप से निर्मित किये गये युद्ध पोत को पहली बार उपसागर कैस्पियन में स्थापित किया। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नज़ाद ने ईरान के नगर अंजली में मीज़ाइल भारक युद्ध पोत जुमरान 2 का उदघाटन किया। इस अवसर पर ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि उपसागर कैस्पियन में युद्ध पोत की तैनाती से क्षेत्र में शान्ति तथा मित्रता बढ़ेगी। रिपोर्ट के अनुसार 1400 टन भारी युद्ध पोत पर 94 मीटर लम्बा एक हेली पैड भी बनाया गया है। इस पर पृथ्वी से पृथ्वी और पृथ्वी से वायुमन्डल में मार करने वाले मीजाइलों के अतिरिक्त विमान-भेदी तोपे और अत्याधुनिक रडार भी स्थापित हैं। इससे पहले ईरान ने 2010 में जुमरान 1 युद्ध पोत का उदघाटन किया था।

इराक में बस अड्डे पर कार बम धमाके में 10 लोगो की मृत्यु, 16 घायल

इारान में बस अड्डे पर कार बम धमाके में 10 लोगों की मृत्यु और 16 लोग घायल हो गये। सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार इराक़ के दक्षिणि नगर बसरा में बस अड्डे को निशाना बनाया गया, जहां कार बम धमाके में 10 लोगो की मृत्यु और 16 लोग घायल हुए, घायलों को निकट अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस धमाके के द्वारा निकट खड़ी गाड़ियों को भी निशाना बनाया गया।

बहरैन में शासन के विरूद्ध धरना प्रदर्शन

बहरैन की राजधानी मनामा में विपक्ष दल के हजारों कार्यकर्ताओं ने शासन के विरूद्ध ज़बरदस्त धरना प्रदर्शन किया। पुलिस तथा धरना प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पों के नतीजे में 40 लोग घायल हो गये, जिनमें दो लोगों की हालत संगीन बतायाी जा रही है। 16 मार्च को बहरीन में सऊदी सैनिकों के हस्तक्षेप के दूसरी पुण्य तिथि के

अवसर पर विपक्ष दल के हजारों कार्यकर्ताओं ने शासन के विरूद्ध धरना प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने टायर जलाये और शासन के विरूद्ध नारे बाजी की। विपक्ष दल अलविफ़ाक ने बताया कि पुलिस से झड़पों में 40 प्रदर्शन कारी घायल हुए। दो साल पूर्व बहरैन में हिंसात्मक धरना प्रदर्शन के पश्चात सऊदी अरब ने विद्रोह पर नियन्त्रण के लिए वहां अपने सैनिकों को तैनात कर दिया था।

यहूदी आबादकार हमले के नतीजे में एक फ़िलस्तीनी बालक घायल

अलख़लील के पुराने शहर में एक यहूदी आबादकार दल ने 9 वर्षीय यासीन अकनीबी पर हमला कर दिया, जिसके नतीजे में बच्चे को मुंह और हाथों पर चोटें आयी। स्थानीय सूत्रों ने बताया कि एक यहूदी पुनर्वासन (आबादकार) ने विद्यालय जाते हुए बच्चों के एक समूह पर पत्थरों की वर्षा की, जिसके बच्चे के मुंह तथा हाथ पर चोटें आयीं। उन्होंने बताया कि बच्चे को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां पर ड़ाक्टरों ने उसका उपचार किया।

फ़िलस्तीनी छात्राओं को मस्जिद अक्सा के शैक्षिक हलकों में जाने से रोक दिया गया

गत सप्ताह के दौरान मस्जिद अक़्सा पर कई बार धावा और नमाज़ियों पर हिंसा करने के पश्चात इज़ाराईली सुरक्षा कर्मियों ने अब मस्जिद के शैक्षिक हलकों को समाप्त करने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया है। इजाराइली सुरक्षाकर्मियों ने मस्जिद अक़्सा के सभी दरवाज़े बन्द कर दिए और मस्जिद अक़्सा में प्रवेश होने वाले सभी लोगों की कड़ी देख रेख शुरू कर दी है। सैहूनी अहलकारों ने पहचान के बाद भी किसी भी छात्रा को मस्जिद में प्रवेश न होने दिया। अक्सा फाउण्डेशन ने बताया कि इस इज़राइली एक़दाम के बाद छात्रांए मस्जिद अक़्सा के इसबात दरवाजे पर एकत्र हो गयीं और मस्जिद अक़्सा के निकटवर्ती स्थानों पर पठन पाठन का कार्य आरम्भ कर दिया। सूत्रों के अनुसार इज़राइली सैनिक ने कम से कम 30 छात्राओं को मस्जिद में जाने से रोक दिया, इज़राइली सैनिकों ने 7 छात्राओं के पहचान पत्र को लेकर उन्हें पूछताछ के लिए जांच केन्द्र बुला लिया। दूसरी ओर इज़राइली गुप्तचर एजेन्सी के कर्मियों की एक बड़ी संख्या ने मस्जिद अक्सा पर धावा बोला और मस्जिद अक्सा के छतदार हिस्से में घुस कर उसका चारों ओर से जायज़ा लिया। इज़राइली फौज के इन वर्तमान हमलों के बाद मस्जिद अक़्सा और पवित्र स्थलों के निर्माण फाउण्डेशन के डायरेक्टर हिकमत नाअना ने कहा कि वर्तमान सैहूनी हमले मस्जिद अक्सा को मुसलमानो और यहूदियों के बीच विभाजित करने के प्रयतनों का अंग है उन्होंने शिक्षा के लिए मस्जिद में आने वाली छात्राओं के मस्जिद में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा ने की घोर निन्दा की और कहा कि हमारा कर्त्तव्य कि हम भर पूर तरीके से अपनी आवाज ऊंची करें कि मस्जिदे अक़्सा खतरे में है। इस नाजुक अवसर पर हम सब का दायित्व है कि मस्जिद अक्सा की ओर कूच करें मुख्यतः सुबह के समय में मस्जिद के मार्गों के शैक्षिक कैम्पों में अपनी उपस्थिति यक़ीनी बनायें।

प्रोफ़ेसर सिब्ते जाफ़र जैदी का निधन

18 मार्च को पाकिस्तान में सिब्ते जाफर जैदी पर आतंकवादी हमला हुआ और वह अपने माबूदे हकीकी से जा मिले। प्रोफ़ेसर सिब्ते जाफ़र ज़ैदी एक अच्छे मरसियाखां होने के साथ-साथ अच्छे कवि और साहित्यकार भी थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह बतुफैले मोहम्मद व आल-मोहम्मद स्वर्गीय के दरजात बलन्द फरमाए और उनके पसमादगान को इस अजीम घटना पर धैर्य करने की क्षमता दे।